Courtesy : insurance worker
Editor : Amanulla Khan
aiiea
Vol.65 No.72 Feb.2022 ₹10 Pages 40+4

RESISTANCE IS GROWING

Workers prepare for General Strike on 23-24 February

Editorial Insurance Worker February, 2022

सरकार की आर्थिक और सामाजिक नीतियों का विरोध बढ़ रहा है। किसानों के सफल, साल भर के संघर्ष के बाद 23-24 फरवरी 2022 को 2 दिवसीय आम हड़ताल की सफलता के लिए मजदूर बड़ी तैयारी कर रहे हैं। इस हड़ताल की कार्रवाई का आह्वान 10 केंद्रीय ट्रेड यूनियनों और बड़ी संख्या में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में लाखों श्रमिकों का प्रतिनिधित्व करने वाले फेडरेशनों और स्वतंत्र लोगों ने किया है। हड़ताल का आह्वान सरकार द्वारा अपनाई जा रही आर्थिक नीतियों का विरोध करने और सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों के निजीकरण के हमले से लड़ने के लिए है। संयुक्त किसान मोर्चा ने इस औद्योगिक कार्रवाई को समर्थन और एकजुटता दी है। हालांकि, सत्ताधारी दल के एक सहयोगी, बीएमएस ने जमीनी स्थिति से मजबूर होकर, हड़ताल के आह्वान में शामिल नहीं किया है, पर सरकार के आर्थिक नीतियों की आलोचना करते हुए और विरोध कार्यों की चेतावनी देते हुए प्रधान मंत्री को एक कड़े शब्दों में पत्र लिखकर एक अभूतपूर्व कदम उठाया है।

AIIEA ने 2 दिवसीय हड़ताल में शामिल होने का फैसला किया है। उसने सभी बीमा कर्मचारियों से उठाई गई मांगों को लोकप्रिय बनाने और हड़ताल की कार्रवाई को अभूतपूर्व सफल बनाने का आह्वान किया है। AIIEA इसे एलआईसी आईपीओ के खिलाफ संघर्ष और सामान्य बीमा कंपनियों के निजीकरण के विरोध में मजदूर वर्ग और समाज के बड़े वर्गों को संगठित करने के अवसर के रूप में मानता है।

AIIEA स्पष्ट रूप से एलआईसी आईपीओ को निजीकरण की दिशा में एक कदम के रूप में देखता है। हालांकि सरकार ने कहा है कि वह अपनी हिस्सेदारी 51% से कम नहीं करेगी, लेकिन इसके ट्रैक रिकॉर्ड को देखते हुए इस आश्वासन पर विश्वास करना मुश्किल है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और सामान्य बीमा के लिए कानूनों के माध्यम से समान आश्वासन दिए गए थे। लेकिन सरकार इन वादों से मुकर गई है। सरकार को न्यूनतम 51% हिस्सेदारी रखने के लिए बाध्य करने वाले खंड को हटाने के लिए सामान्य बीमा में विधायी परिवर्तन लाए गए हैं। सरकार बैंकों के निजीकरण को सक्षम करने के लिए अपनी हिस्सेदारी को 51% से कम करने के लिए बैंकिंग अधिनियम में संशोधन करने के लिए कानून लाने में लगी हुई है।

सार्वजनिक क्षेत्र ने राष्ट्रीय विकास में एक शानदार भूमिका निभाई है। इसने भारत को औद्योगीकृत देशों के जोड़-तोड़ के आगे झुके बिना आर्थिक नीतियों को आगे बढ़ाने की स्वतंत्रता प्रदान की। सार्वजनिक क्षेत्र का निजीकरण सार्वजानिक संपत्ति को सस्ते दर पर क्रोनी पूंजीपतियों को सौंपना है। सरकार जहां सार्वजनिक क्षेत्र के निजीकरण में व्यस्त है, वहीं उसने सबसे बड़ी शेयरधारक बनकर संघर्षरत दूरसंचार कंपनी वोडाफोन को उबारने का फैसला किया है। यह मुनाफे के निजीकरण और घाटे के राष्ट्रीयकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। सरकार ने टाटा को सस्ते दामों पर एयर इंडिया बेच दी है। सरकार ने सेंट्रल इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, एक अग्रणी सौर फोटोवोल्टिक कोशिकाओं के निर्माता को एक फाइनेंस लीजिंग कंपनी को 210 करोड़ रुपये में बेचने की योजना बनाई है, जबकि इसका मूल्य 400 करोड़ रुपये से अधिक होने का अनुमान है। यह राफेल सौदे से मिलता-जुलता है जहां अनिल अंबानी की कंपनी को क्रोनी पूंजीपतियों की मदद करने के लिए समर्थन दिया गया था। सरकार ने बड़ी संख्या में सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों को बिक्री के लिए लाइन में खड़ा किया है। उसकी सार्वजनिक उद्यम नीति यह स्पष्ट करती है कि समय के साथ वह सभी गैर-रणनीतिक उद्यमों को

बेचना चाहती है और रणनीतिक क्षेत्र में केवल न्यूनतम उपस्थिति बनाए रखना चाहती है। राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन के माध्यम से, सरकार महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को निजी क्षेत्र को सौंपने का इरादा रखती है।

इस संदर्भ में देखा जाए तो एलआईसी आईपीओ पर सरकार का निर्णय समाज को किसी भी लाभ के बजाय वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए संसाधनों को जुटाने की उत्सुकता को दर्शाता है। एलआईसी को पॉलिसीधारकों के भरोसे और पैसे से बनाया गया है। उसे उन उद्देश्यों को प्राप्त करने का काम सौंपा गया है जो पूरे समाज को लाभान्वित करते हैं और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की मदद करते हैं। एलआईसी पर सरकार की नीति का कोई आर्थिक या सामाजिक औचित्य नहीं है। बल्कि यह नीति राष्ट्रीयकरण के उद्देश्यों और भारतीय संविधान की आत्मा के साथ विश्वासघात है। इसलिए सरकार की इस नीति को चुनौती देना पूरे समाज की जिम्मेदारी है। उसके लिए बीमा कर्मचारियों को लोगों को शिक्षित करके और जन समर्थन जुटाकर अपनी भूमिका निभानी होगी। इस अवसर का उपयोग सामान्य बीमा कंपनियों के निजीकरण के खिलाफ अपना मामला पेश करने के लिए भी किया जाना चाहिए।

वर्तमान सरकार का आर्थिक प्रदर्शन पर सबसे खराब रिकॉर्ड है। 2016 के बाद से अर्थव्यवस्था नीचे खिसक रही है। विमुद्रीकरण और जीएसटी नीति के खराब क्रियान्वयन से हुई क्षति ने इस गिरावट में बहुत योगदान दिया। कोविड 19 की शुरुआत से ठीक पहले, भारत ने वित्तीय वर्ष 2019-20 को 4% की मामूली वृद्धि के साथ बंद कर दिया, जो दो दशकों में सबसे कम है। हालांकि सरकार दावा कर रही है कि अर्थव्यवस्था ठीक हो गई है और विकास की राह पर है, यह तेजी से स्पष्ट होता जा रहा है कि चालू वित्त वर्ष में भी इसे पूर्व-कोविड स्तरों तक पहुंचना मुश्किल हो सकता है। वर्ष 2021-22 के लिए सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि का उन्नत अनुमान जहां 9.2% की वृद्धि दर है, वहीं विश्व बैंक ने विकास दर 8.3

प्रतिशत आंकी है। भारतीय अर्थव्यवस्था आज मांग की कमी है। यह इस तथ्य से परिलक्षित होता है कि निजी उपभोग व्यय जो कि सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 60% है, पूर्व-कोविड स्तरों से कम है। इससे पता चलता है कि लोगों को कितनी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। इस संकट को इस बात से भी देखा जा सकता है कि आज भारत में प्रति व्यक्ति आय बांग्लादेश की तुलना में कम है।

अनौपचारिक क्षेत्र जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में 52% का योगदान देता है और भारी संख्या में श्रमिकों को रोजगार देता है, सरकार की नीतियों से गंभीर रूप से प्रभावित होता है। इससे रोजगार में भारी गिरावट आई है। बेरोजगारी दर 8% को छू गई है और श्रम बल की भागीदारी दर सबसे निचले स्तर पर है। जबकि भारत की कामकाजी उम्र की आबादी में वृद्धि हुई है, रोजगार कम हो गया है। इसका विनाशकारी प्रभाव पड़ेगा। आज पूर्व-कोविड स्तरों की तुलना में रोजगार करने वालों की संख्या बहुत कम है। एक और परेशान करने वाली विशेषता नियमित वेतनभोगी नौकरियों में लगातार गिरावट और कई मौजूदा नौकरियां अनिश्चित होती जा रही हैं। देश में महंगाई में भी भारी उछाल देखने को मिल रहा है। उच्च खाद्य मुद्रास्फीति लोगों की खाद्य सुरक्षा पर सवाल उठा रही है। जबकि शीर्ष 1% आबादी अमीर हो गई है, मध्यम वर्ग और पिरामिड के नीचे के लोग संकट का खामियाजा भुगत रहे हैं। भारतीय शेयर बाजार नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं जबकि वास्तविक अर्थव्यवस्था संघर्ष कर रही है। देश ने उस तरह की असमानताओं को कभी नहीं देखा जैसा हम आज देखते हैं। यह स्थिति ट्रेड यूनियन आंदोलन को स्वीकार्य नहीं हो सकती। आर्थिक मोर्चे पर पूरी तरह विफल रही सरकार द्वारा आर्थिक मोर्चे पर इन विफलताओं को समाज को विभाजित करके और धार्मिक ध्रुवीकरण को प्रोत्साहित करके कवर किया गया है। अल्पसंख्यकों के जनसंहार के आह्वान के साथ ही अल्पसंख्यकों से घृणा और अन्य की राजनीति खतरनाक अनुपात में पहुंच गई है। प्रधानमंत्री और सरकार के अन्य पदाधिकारियों की चुप्पी यह संदेश देती है कि नफरत फैलाने वालों को राज्य का पूरा समर्थन है और इससे

डरने की कोई बात नहीं है। लोगों के लोकतांत्रिक संघर्षों को राष्ट्रविरोधी करार देकर कमतर आंकने की कोशिश की जाती है। हमने किसानों के संघर्ष को खालिस्तानी साजिश के तौर पर पेश करने की कोशिशों को देखा है। किसान आंदोलन सफल हुआ क्योंकि उसने सरकार के खेल को समझा और किसानों को धर्म और क्षेत्र के आधार पर विभाजित करने के सभी प्रयासों को हरा दिया। मजदूर वर्ग को भी उसी परिपक्वता का प्रदर्शन करना चाहिए और राष्ट्रीय एकता और अपनी मुक्ति के लिए अपने आंदोलन को विभाजित करने की सभी साजिशों को हराना चाहिए।

मजदूर वर्ग के लिए 2 दिन की हड़ताल को अभूतपूर्व सफल बनाना अनिवार्य है। उन्हें बिना किसी अनिश्चितता के सरकार को बताना चाहिए कि वे आम लोगों पर भारी कठिनाइयों का बोझ डाल रही आर्थिक और सामाजिक नीतियों से लड़ने के लिए दृढ़ हैं। राज्य को अर्थव्यवस्थाओं में एक बड़ी भूमिका निभाने की अनुमति देने के लिए दुनिया भर के देश नवउदारवाद पर वाशिंगटन की आम सहमति से विचलित हो गए हैं। भारत सरकार को बदनाम नव-उदारवाद के प्रति वफादार रहने का कोई कारण नहीं है। इस संघर्ष में बीमा कर्मचारियों को प्रमुख भूमिका निभानी है। उन्हें न केवल अपने संस्थानों में हड़ताल को सफल बनाना चाहिए बल्कि सरकार को विनाशकारी आर्थिक और सामाजिक नीतियों को छोड़ने के लिए मजबूर करने के लिए इस महान लड़ाई में शामिल होने के लिए आबादी के विशाल वर्ग को शिक्षित और संगठित करने में भी मदद करनी चाहिए।